अ नु शं सा

हम अनुशंसा करते हैं कि श्री भरत बंडू मोरे का एम्·फिल्·(हिन्दी) का लघु-शोध-प्रबंध **"विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी-समस्या"** परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाय।

(J.R. Jadhav)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग

L.B.S. COLLEGE SATARA

पुरुषोत्तम शेठ,
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा (महाराष्ट्र)

डॉ· व्यंकटेश वामन कोटबागे
एम्·ए·,पीएच्·डी·
रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय, वाई
जि·सातारा-415 803 (महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं, डॉ·व्यंकटेश वामन कोटबागे, किसन वीर महाविद्यालय, वाई (हिन्दी विभाग) यह प्रमाणित करता हूँ कि, श्री भरत बंडू मोरे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्·फिल्·(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध **"श्री विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी-समस्या"** मेरे निर्देशन में सफलता पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। श्री·भरत बंडू मोरे के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

दिनांक : 29/6/09

(डॉ·व्यंकटेश वामन कोटबागे)
शोध-निर्देशक

"विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी-समस्या"

प्र ख्या प न

यह शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्·फिल्·﴾हिन्दी﴿ के प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

सातारा

दिनांक : 29/9/99

﴾श्री भरत बंडू मोरे﴿

शोध-छात्र के हस्ताक्षर

भू मि का

आधुनिक हिन्दी नाटककारों में श्री विष्णु प्रभाकरजी एक सफल नाटककार के रूप में पहचाने जाते हैं। आपने साहित्य के लगभग सभी क्षेत्रों में अपनी लेखनी का प्रयोग किया है। किन्तु हिन्दी साहित्य में आपका विशेष स्थान नाटककार के रूप में ही है। सन 1957 से लेकर अब तक आपने कुल 15 नाटकों की रचना की है। मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक नाटक लिखने में आप अधिक सफल रहे हैं। आपकी जीवन दृष्टि एक प्रगतिशील मानववादी लेखक की दृष्टि रहने के कारण ही आपने अपने नाटकों में समाज में प्रचलित मानव जीवन की समस्याओं का सही सुलझाव ढूँढने का प्रयास किया है। यही कारण है कि आपके साहित्य में आपका नाटककार का व्यक्तित्व भारी पडता है। आप हमेशा से नारी स्वातंत्र्य और स्वावलम्बी नारी के समर्थक रहे हैं। आपने अपने नाटकों में ऐसे विषयवस्तु को चुना है जहाँ नारी का एक व्यक्तित्व बन पाया है। आपके मन में नारी के प्रति श्रद्धा है, आप उसे बंधन मुक्त और स्वावलम्बी देखना चाहते हैं। तभी तो आप अपने नाटकों में नारी के आदर्श रूप को भूले नहीं हैं। आपको नारी मन के चितेरे कहा जाता है। आपने समाज में नारी की स्थिति को लेकर नाटकों की रचना की है। आपके नाटकों का मूल स्वर नारी की मुक्ति और नारी-शोषण का विरोध है। आप नारी के सामाजिक और आर्थिक समानता के पक्षधर हैं। आपके नाटकों में नारी की मानसिक व्यथा रही है। नारी-जीवन की समस्याओं को सामजिक सन्दर्भ में प्रस्तुत करने का आपने प्रयत्न किया है। इस लघु-शोध-प्रबंध में आपके नाटकों में नारी-समस्या का मूल्यांकन किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय में "**विष्णु प्रभाकर : व्यक्तित्व एवं नाटककार**" पर काम किया है। द्वितीय अध्याय में "**विष्णु प्रभाकरजी के नाटकों में सामाजिक जीवन की समस्याएँ और नारी-समस्या**"

पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। तृतीय अध्याय में "विष्णु प्रभाकर के नाटकों में प्रतिबिंबित नारी-जीवन" का चित्रण करते हुए नारी-जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। चतुर्थ अध्याय में "विष्णु प्रभाकर के नाटकों में नारी-मनोविज्ञान" पर गहराई से विचार किया है। पंचम अध्याय में इस सब विषयों का मूल्यांकन किया है। कुल-मिलाकर इस लघु-शोध-प्रबंध में विष्णु प्रभाकर के व्यक्तित्व एवं नाटककार, सामाजिक जीवन की समस्याएँ और नारी-समस्या, प्रतिबिंबित नारी जीवन, नारी मनोविज्ञान आदि का अध्ययन कर उनका मूल्यांकन किया है।

कृतज्ञता-ज्ञापन

प्रस्तुत शोध-प्रबंध निर्देशक गुरूवर्य डॉ॰व्यंकटेश वामन कोटबागे, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, किसन वीर महाविद्यालय, वाई, जि॰सातारा (महाराष्ट्र) के स्नेहपूर्ण निर्देशन में लिखा गया है। उनके सुयोग्य मार्गदर्शन और अमूल्य सुझावों से मैं उपकृत हुआ हूँ। मेरे अनुसंधान कार्य की पूर्ति उनके वासत्यपूर्ण आशीर्वाद का ही प्रतिफल है। मेरा मन उनके प्रति श्रध्दावनत है ।

इस शोध-कार्य के लिए मुझे लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज के प्राचार्य पुरूषोत्तम शेठ, डॉ॰गजानन सुर्वे, छत्रपति शिवाजी कॉलेज सातारा के डॉ॰शिवाजीराव निकम, प्रा॰एस॰डी॰आढाव, प्रा॰शिवाजीराव लेम्बे, प्रा॰रवीन्द्र रणखांबे जिन्होंने मुझे अपने सुझाव और सहयोग से प्रोत्साहित किया। उनसे मेरा शोध-कार्य सहज तथा सुलभ हुआ। मैं उन सबका अति ऋणी हूँ।

मेरे पूज्य पिता श्री॰बंडू मोरे, माता सुलोचना, भाई संजय और बाळू तथा परिवार के अन्य सदस्य जिनकी शुभेच्छाएँ, सहयोग तथा सहानुभूति के कारण मेरा यह शोध-प्रबन्ध सम्पन्न हो सका। मेरे इष्ट मित्र दत्तराज नलावडे, वन्दना नलावडे (ज्ञानदीप क्लासेस वाढे, सातारा), सत्यवान जांभळे, जयश्री पवार और मेरे मित्र होकर भी मुझे गुरू समान होने वाले प्रा॰नलिनी पवार, कुमुदिनी मेंडा, राजेन्द्र नलावडे, डॉ॰के॰एम॰लिखितकर इन सबकी आत्मीयता और सहयोग की भावना के प्रति मैं अत्यन्त आभारी हूँ।

इस प्रबंध के लिए मुझे लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज, सातारा, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा और किसन वीर महाविद्यालय, वाई के ग्रंथालयों और ग्रंथालयों में काम करने वाले कर्मचारियों से जो सहायता मिली उसके लिए मैं उनका अत्यन्त

आभारी हूँ। इस शोध-कार्य के लिए मैंने जिन सन्दर्भ-ग्रन्थों का उपयोग किया हैं उन सभी लेखकों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ।

इस लघु-शोध-प्रबंध का तत्परता और सहयोग की भावना से टंकन-लेखन करने वाले "**रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग,सातारा**" के श्री·मुकुन्द ढवले तथा उनके सहयोगी श्री·सुशीलकुमार कांबले, राजू कुलकर्णी के प्रति आभार मानना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

दिनांक : 29/9/99

श्री·भरत बंडू मोरे